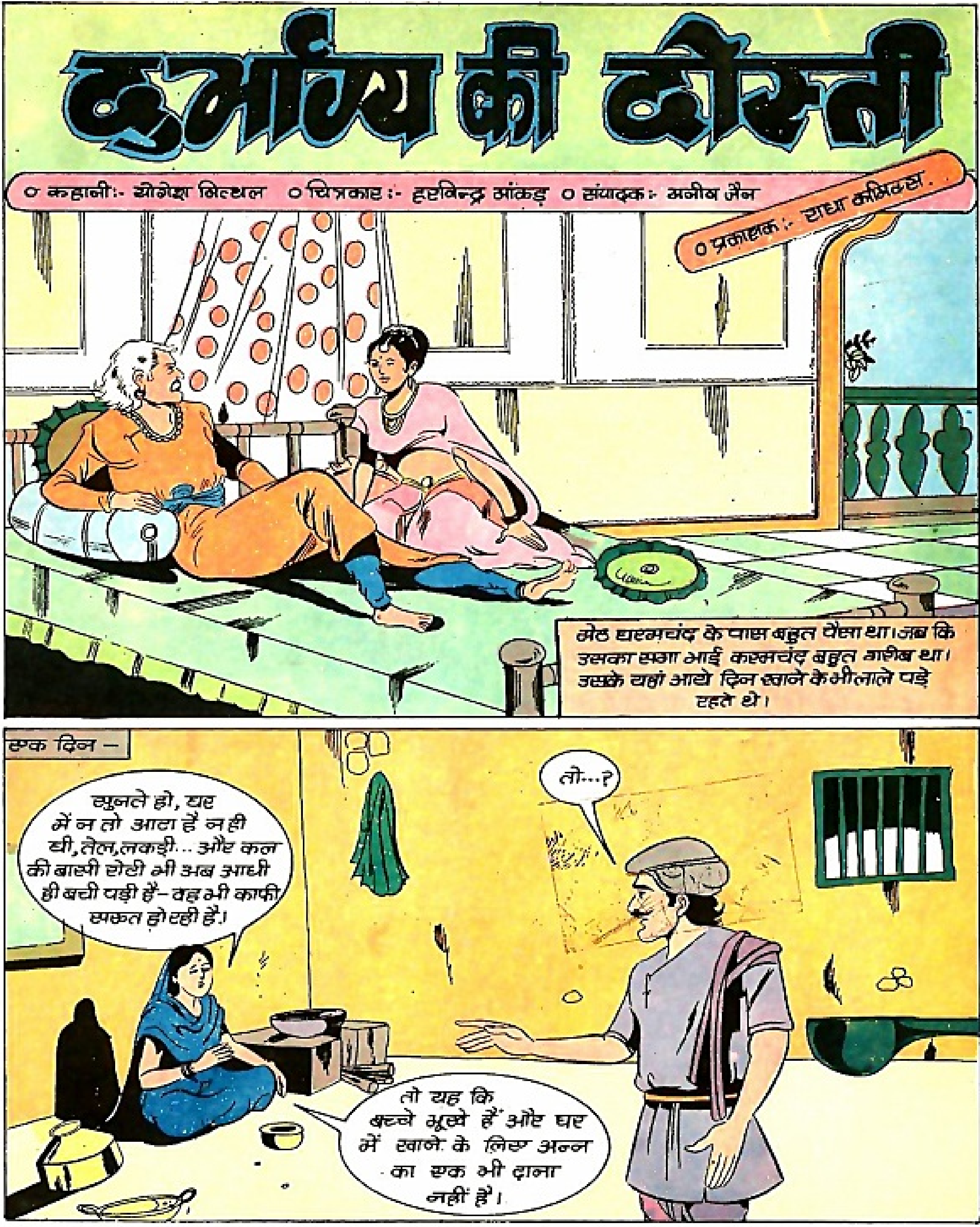
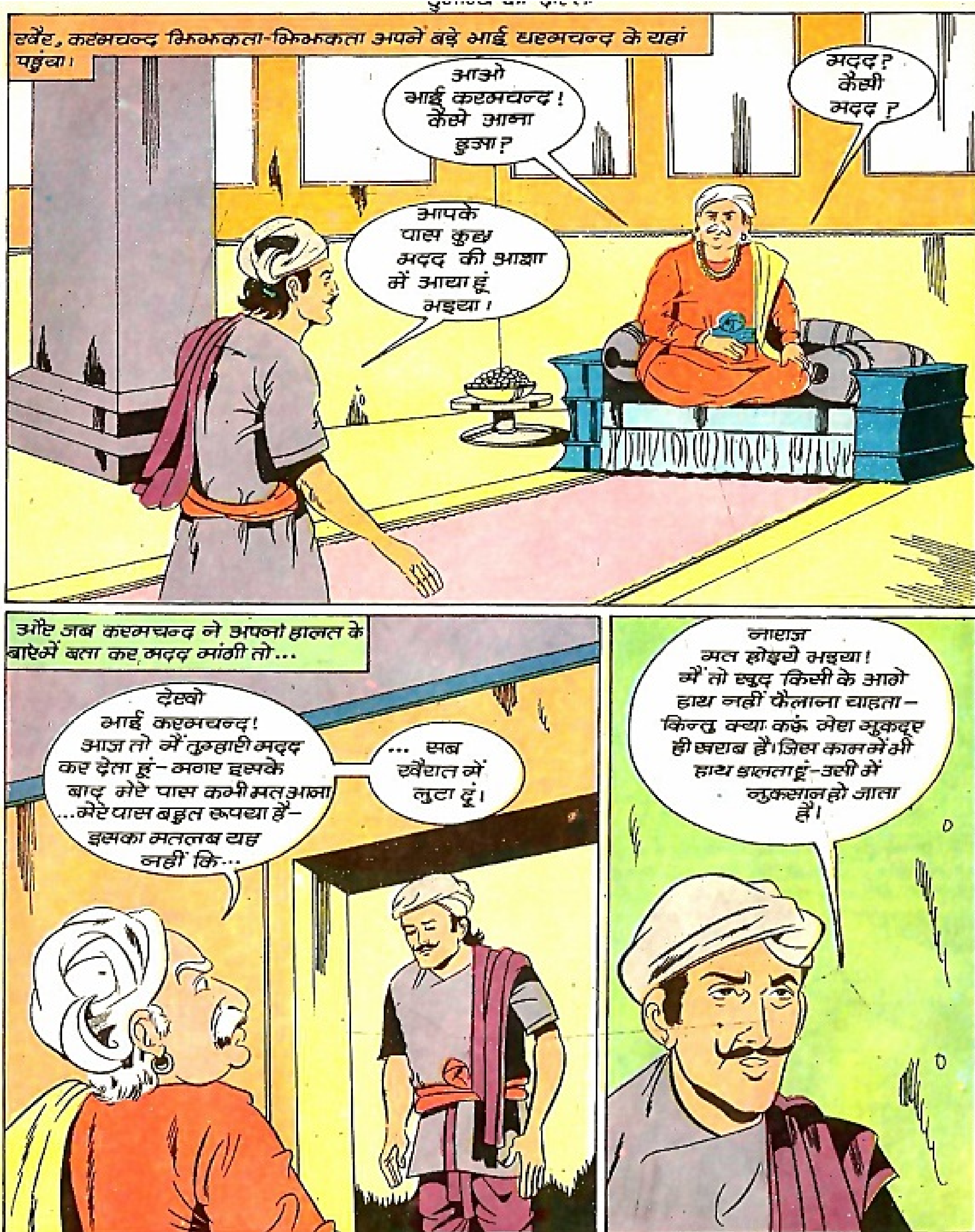

राधा
कॉमिक्स
मूल्य
दुर्भाग्य से दोस्ती


दुर्भाग्य की दोस्ती
○ कहानी :- योगेश मित्तल ○ चित्रकार :- हरविन्द्र मांकड़ ○ संपादक :- मनीष जैन
○ प्रकाशक :- राधा कॉमिक्स.
सेठ धरमचंद के पास बहुत पैसा था। जब कि उसका सगा भाई करमचंद बहुत गरीब था। उसके यहां आये दिन खाने के भी लाले पड़े रहते थे।
एक दिन –
सुनते हो, घर में न तो आटा है न ही घी, तेल, लकड़ी... और कल की बासी रोटी भी अब आधी ही बची पड़ी है– वह भी काफी सख्त हो रही है।
तो...?
तो यह कि बच्चे भूखे हैं और घर में खाने के लिए अन्न का एक भी दाना नहीं है।


यह तो मैं भी जानता हूं पार्वती। मगर मैं भी क्या करूं - जिस धन्धे में भी हाथ डालता हूं - नुकसान ही हाथ लगता है... पिछले दिनों फलों का ठेला लगाया था - सोचा सारे फल बिक जायेंगे तो कुछ तो मुनाफा होगा - मगर हुआ यह कि फल कई दिन तक नहीं बिके - आखिरकार सारे फल सड़ गये और अपनी पूंजी भी नष्ट हो गई।
ठीक कहते हो। हम लोगों की किस्मत ही खोटी है। वरना आज हमारा यह हाल क्यों होता - ससुरजी का जब स्वर्गवास हुआ तब आप में और जेठ जी में बराबर-बराबर बंटवारा हुआ था - मगर आज वो सेठ कहलाते हैं और तुम हो फक्कड़।
सुनो, मुसीबत में तो अपने ही अपनों के के काम आते हैं - तुम क्यों नहीं अपने बड़े भाई से कुछ धन उधार ले आते? मुझे विश्वास है कि जब तुम अपनी दुर्दशा के बारे में जेठजी को बताओगे तो वह तरस खाकर तुम्हें कुछ न कुछ जरूर देंगे - तुम्हारी मदद जरूर करेंगे।
अपनी पत्नी के बहुत कहने पर करमचंद अपने भाई के घर की ओर चल दिया। अपने भाई से कुछ धन उधार मांगने के लिए -
पता नहीं भैया धरमचन्द उधार देंगे भी या नहीं। कहीं वह साफ मना न कर दें।

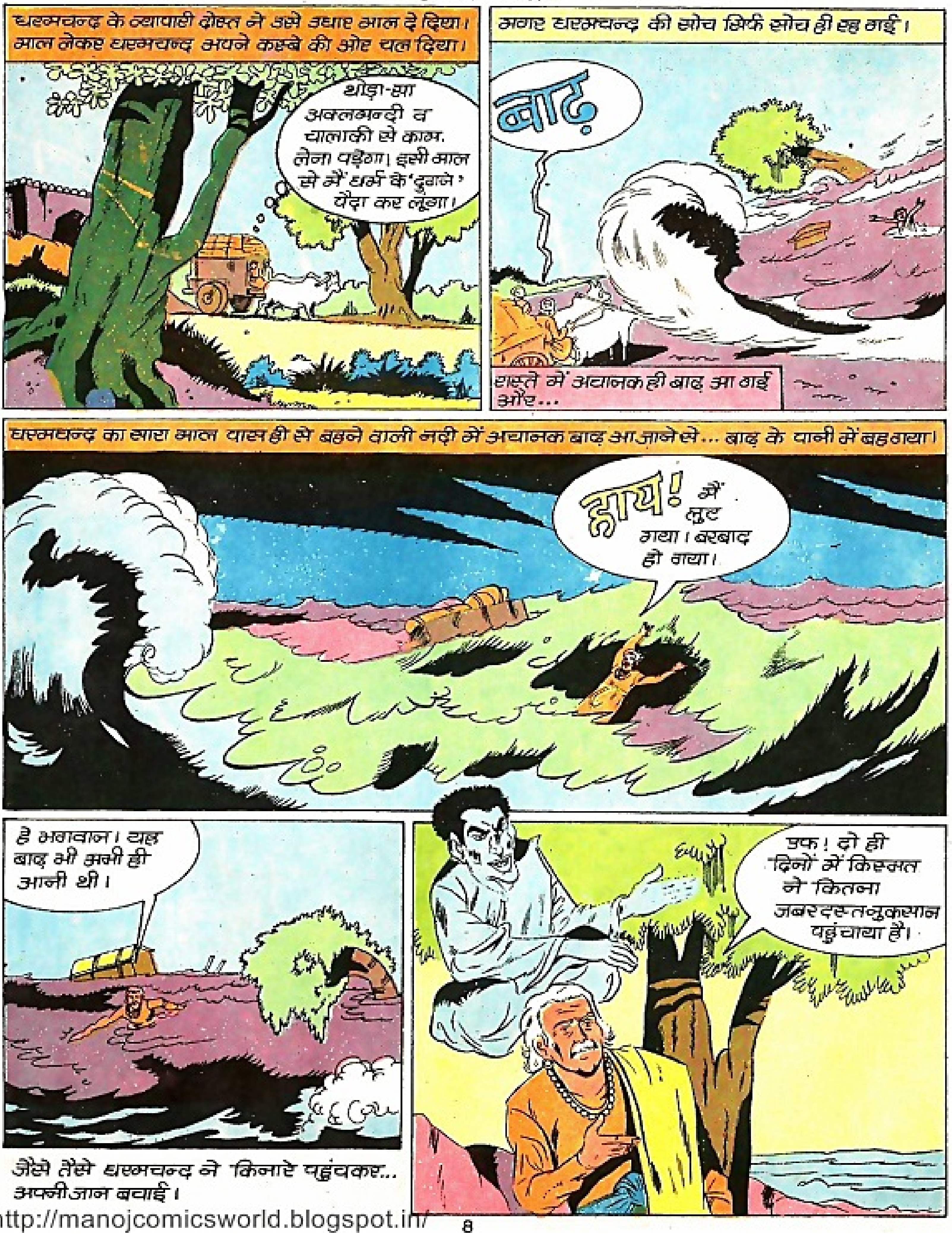

खैर, करमचन्द झिझकता-झिझकता अपने बड़े भाई धरमचन्द के यहां पहुंचा।
आओ भाई करमचन्द! कैसे आना हुआ?
आपके पास कुछ मदद की आशा में आया हूं भइया!
मदद? कैसी मदद?
और जब करमचन्द ने अपनी हालत के बारे में बता कर मदद मांगी तो...
देखो भाई करमचन्द! आज तो मैं तुम्हारी मदद कर देता हूं–मगर इसके बाद मेरे पास कभी मत आना ...मेरे पास बहुत रूपया है–इसका मतलब यह नहीं कि...
...सब खैरात में लुटा दूं।
नाराज मत होइये भइया! मैं तो खुद किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना चाहता–किन्तु क्या करूं मेरा मुकद्दर ही खराब है। जिस काम में भी हाथ डालता हूं–उसी में नुकसान हो जाता है।


लगता है मेरे सिर पर दुर्भाग्य सवार है- जो किसी भी काम में मुझे पनपने ही नहीं देता।
करमचन्द की बात पर धरमचन्द जोर से हंसा और बोला—
हा-हा-हा! ऐसा करो करमचन्द- तुम अपना दुर्भाग्य मुझे दे दो- मैं दुर्भाग्य से भी दोस्ती कर लूंगा।
भाग्य-दुर्भाग्य की बातें बेवकूफ करते हैं करमचन्द। मुझे देखो मैंने जो कुछ भी कमाया है अपनी अक्ल से कमाया है- भाग्य-दुर्भाग्य से नहीं! तुम भी अक्ल का सही इस्तेमाल करना सीखो बेवकूफ आदमी।
और करमचन्द को अच्छी तरह डांट फटकार कर भगाने के बाद सेठ धरमचन्द मुड़ा ही था कि एकाएक उसकी नजर एक फटेहाल व्यक्ति पर पड़ी- जो ठीक उसी स्थान पर बैठा था -जहां थोड़ी देर पहले करमचन्द खड़ा था।
अरे... तुम कौन हो?
मैं दुर्भाग्य हूं!
दुर्भाग्य! हा-हा-हा-! तुम जरूर कोई मसखरे हो!


नहीं! मैं सचमुच दुर्भाग्य हूं! मगर आप तो भाग्य-दुर्भाग्य को नहीं मानते... अपने सिर पर मुझे ज़रा-सी जगह दे सकें तो बड़ी कृपा होगी।
सिर पर जगह! क्या बकते हो?
वैसे तो आप इजाज़त न भी दें तो भी मैं आपके सिर पर सवार हो सकता हूं।
कैसे?
ऐसे!
अरे-अरे यह क्या करते हो? उतरो... उतरो मेरे सिर पर से।
क्यों नाराज़ होते हो भाई। तुम्हारा छोटा भाई तो कभी मुझ से नाराज़ नहीं हुआ - मैं बरसों उसके सिर पर सवार रहा।
घबराओ मत! मैं तुम्हारे सिर पर सवार रहूंगा... तब भी तुम्हें ज़रा भी वज़न महसूस नहीं होगा। मगर मैं रहूंगा तुम्हारे साथ - एक दोस्त की तरह।
ठीक है - ठीक है! अगर दोस्त की तरह रहते हो तो मुझे तुम्हारी दोस्ती कबूल है।


ठीक है, अब जब तुम मुझसे बात करोगे तो मैं तुम्हें दिखाई दूंगा—वरना नहीं। और तुम्हारे अलावा किसी को दिखाई नहीं दूंगा।
और उस रोज रात को जब सेठ करमचन्द सोया तो दुर्भाग्य उसके सिर पर सवार था।
उसी रात—
अचानक सेठ करमचन्द के घर में आग लग गई।
पिताजी-पिताजी उठिये ! घर में आग लग गई।
नहीं!
जैसे तैसे जान बचाकर सेठ करमचन्द अपनी पत्नी व बच्चों के साथ घर से बाहर निकला। तभी—
मालिक... गजब हो गया मालिक !
सेठ धरमचन्द की दुकान का एक नौकर दौड़ता हुआ वहां आया।
और उसने बताया—
दुकान पर डाका पड़ गया मालिक... डाकू दुकान से सारा कीमती सामान और रूपया लूट ले गये।
नहीं ऽऽ

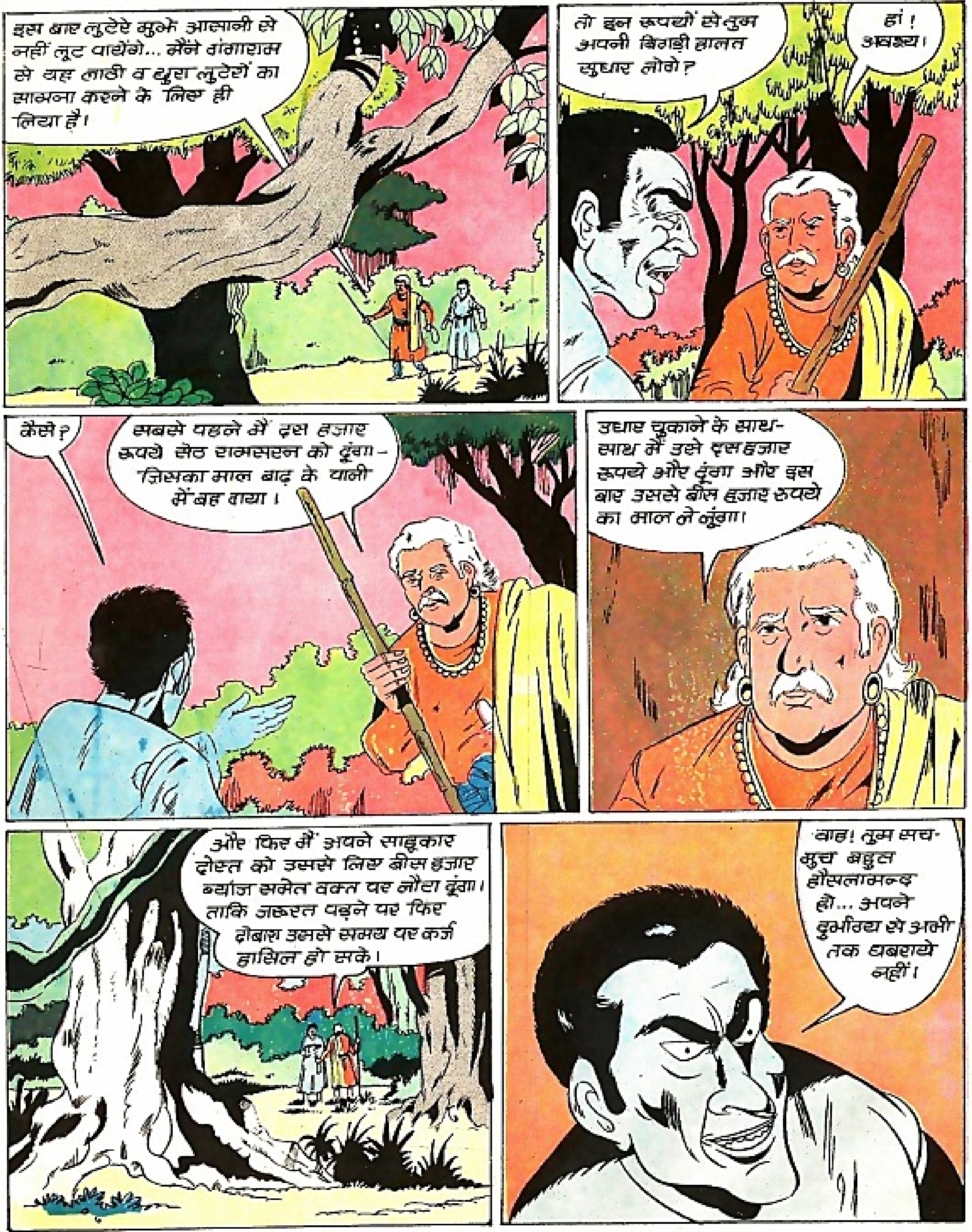

बाद में -
च-च-च ! बहुत बुरा हुआ तुम्हारे साथ ! क्यों धरमचन्द ?
हां, लेकिन मैं सब ठीक कर लूंगा। अभी कल ही मैंने अपने कई कारिन्दों को शहर से माल लाने भेजा था... दस हजार रुपये देकर। वे कल अथवा परसों तक माल ले आयेंगे।
ओह। यानि तुम्हें किसी के आगे हाथ पसारने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
जरूरत पड़ भी जाये तो मेरे लिए कोई विशेष चिन्ता की बात नहीं। मेरे बहुत से दोस्त हैं- जो मुझ पर अगाध विश्वास रखते हैं और सिर्फ अपनी जुबान के बल पर मैं लाख दो लाख तो चुटकियों में इकट्ठा कर सकता हूं!
लेकिन कई दिन बीत गये- जब सेठ धरमचन्द के कारिन्दे शहर से माल लेकर न आये तो वह स्वयं शहर गया। उसने उन व्यापारियों से पूछताछ की- जिनसे उसके कारिन्दों ने माल लेना था।
क्या कहते हो धरमचन्द ! हमारे पास तो तुम्हारा कोई कारिन्दा नहीं आया।
ज्ञानचन्द राम सरन थोक व्यापारी
नहीं- नहीं- ऐसा नहीं हो सकता।
अगर हुआ तो ऐसा ही है। पैसा बुरी चीज है... लगता है तुम्हारे दस हजार लेकर तुम्हारे नौकर भाग निकले हैं।
किन्तु अगर मैं माल लेकर नहीं गया तो दुकान का तो भट्टा ही बैठ जायेगा।
ऐसा करो रामसरन तुम माल मुझे उधार दे दो- पैसे मैं अगले हफ्ते भेज दूंगा।


धरमचन्द के व्यापारी दोस्त ने उसे उधार माल दे दिया। माल लेकर धरमचन्द अपने कस्बे की ओर चल दिया।
थोड़ा-सा अक्लमन्दी व चालाकी से काम लेना पड़ेगा। इसी माल से मैं धर्म के 'दुगने' पैदा कर लूंगा।
मगर धरमचन्द की सोच सिर्फ सोच ही रह गई।
बाढ़
रास्ते में अचानक ही बाढ़ आ गई और...
धरमचन्द का सारा माल पास ही से बहने वाली नदी में अचानक बाढ़ आ जाने से... बाढ़ के पानी में बह गया।
हाय! मैं लुट गया। बरबाद हो गया।
हे भगवान। यह बाढ़ भी अभी ही आनी थी।
जैसे तैसे धरमचन्द ने किनारे पहुंचकर... अपनी जान बचाई।
उफ! दो ही दिनों में किस्मत ने कितना जबरदस्त नुकसान पहुंचाया है।


अरे! तुम क्यों अपनी किस्मत का रोना रोने लगे—तुम तो भाग्य-दुर्भाग्य को मानते ही नहीं हो।
हां नहीं मानता। अब भी नहीं मानता। बाढ़ तो प्राकृतिक विपदा थी—अगर मैंने पहले से नदी के बारे में मालूमात कर रखी होती तो मैं इस नुकसान से बच सकता था।
मगर अब तुम क्या करोगे?
मैं सब ठीक कर लूंगा। मैं भाग्य-दुर्भाग्य से घबरा कर निठल्ला बैठने वाला नहीं हूं।
अगले दिन धरमचन्द अपने एक साहूकार मित्र के पास पहुंचा।
मुझे बीस हजार रूपये चाहिये मित्र। अगले माह लौटा दूंगा।
साहूकार दोस्त ने आवश्यक लिखा पढ़ी करके धरमचन्द को रूपया दे दिया। रूपया लेकर धरमचन्द घर की ओर जा ही रहा था कि अचानक…
खबरदार! जो कुछ भी माल-मता है—फौरन हमारे हवाले कर दो वरना…।
नहीं.. नहीं!
रास्ते में उसे लुटेरों ने घेर लिया।

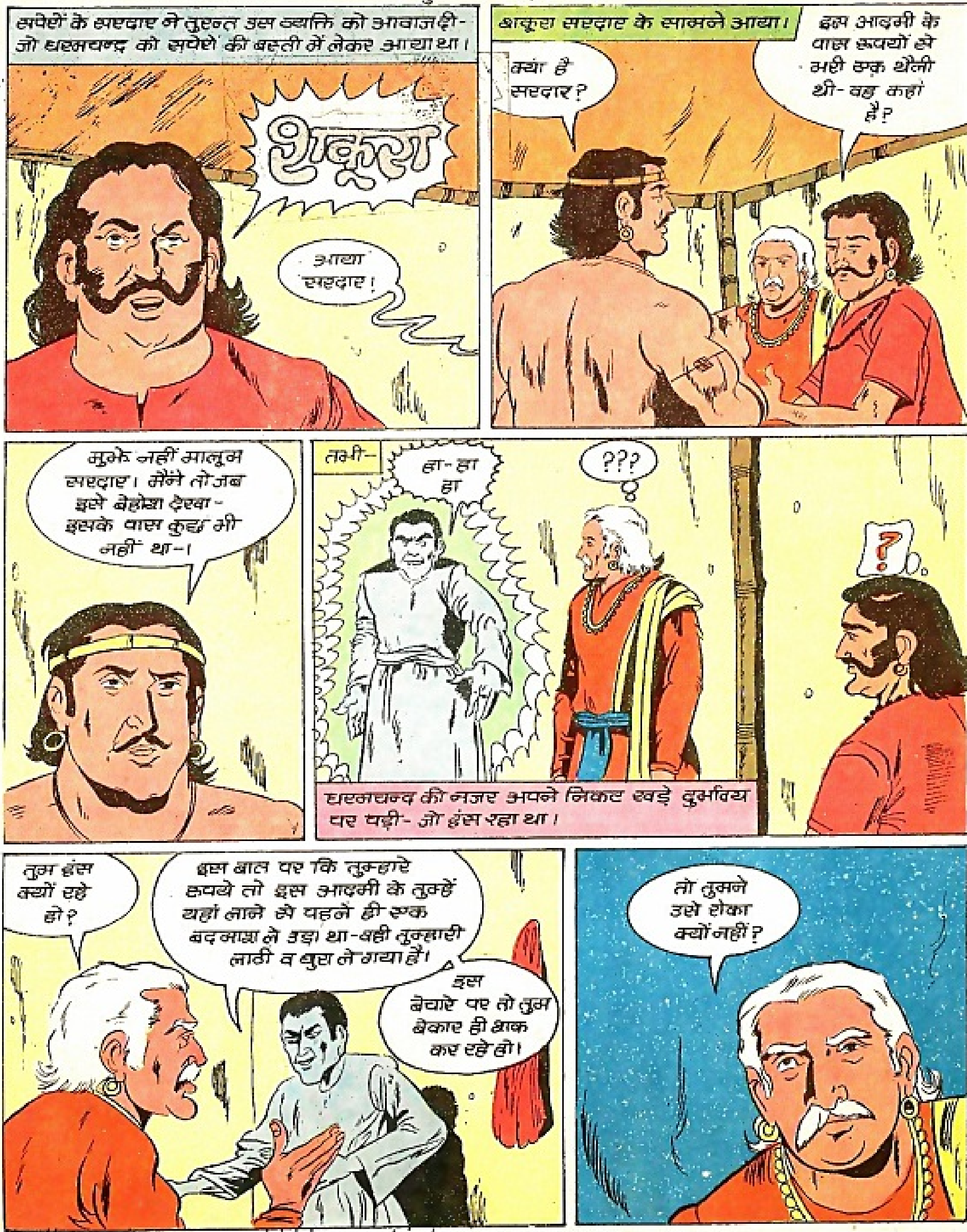

धरमचन्द ने रुपया देने में आनाकानी की तो लुटेरों ने उसे मार पीटा...
...और रुपया छीन कर ले गये।
हाय री किस्मत ! ये रुपये भी हाथ से निकल गये।
अरे ! तुम तो फिर से अपनी किस्मत को कोसने लगे। तुम तो भाग्य-दुर्भाग्य को नहीं मानते...!
तुम-तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो... उतरो उतरो मेरे सिर पर से।
नहीं! मैं मजाक नहीं उड़ा रहा- मैं तो यह कह रहा था कि चोर उचक्के तो हर जगह होते हैं और लूट-पाट भी करते ही रहते हैं।
अगर लुटेरों ने तुम्हें लूट लिया तो इसमें भाग्य का क्या कुसूर ?
ठीक है-ठीक है! मैं मान गया- भाग्य दुर्भाग्य भी कोई चीज होती है... अब तुम जाओ मेरा पीछा छोड़ो।
क्यों ? बहुत जल्दी मेरे साथ से घबरा गये... तुम्हारे भाई के साथ-तो मैं बरसों रहा हूं... उसने तो कभी रोते हार नहीं मानी।

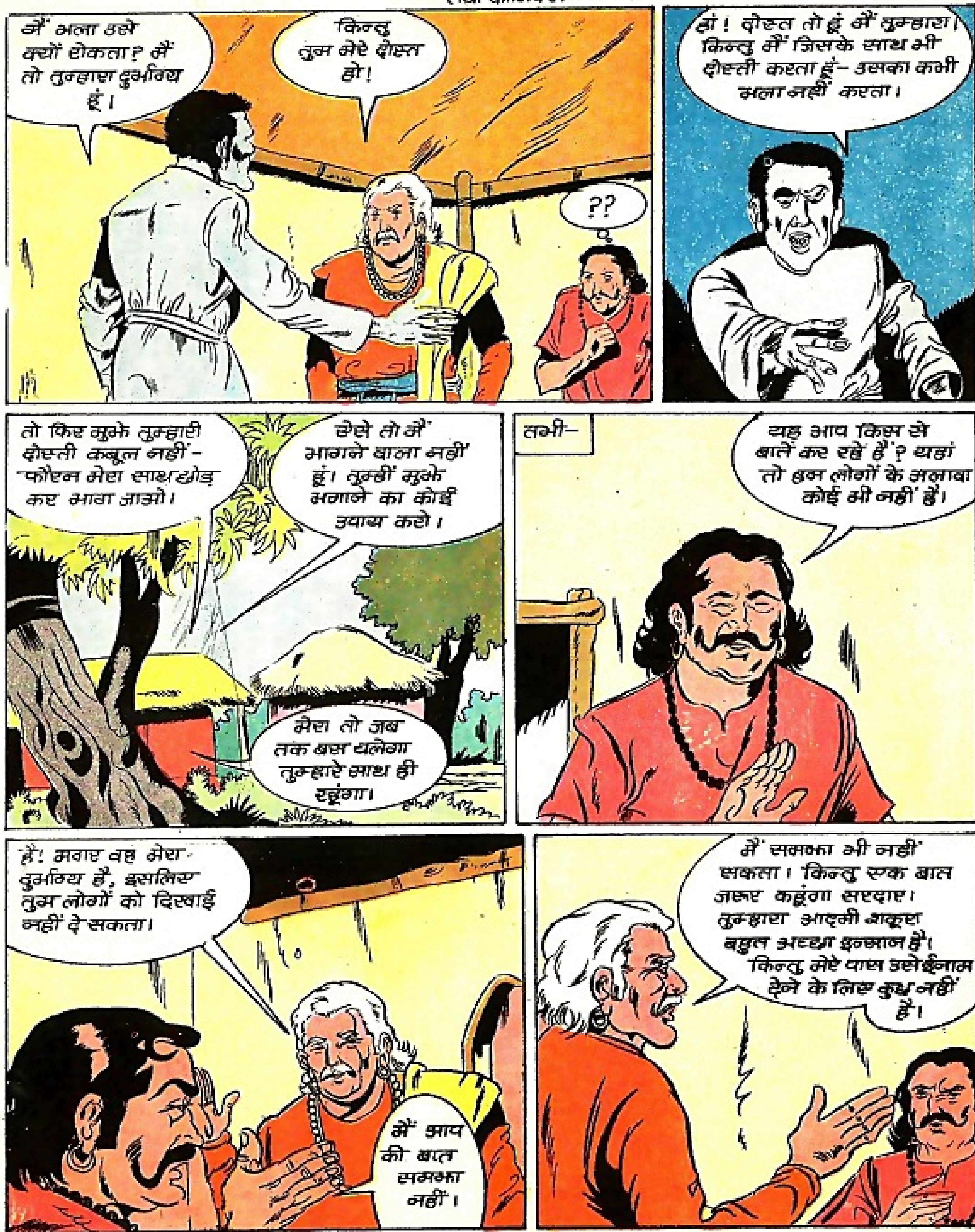

ठीक है! अब मैं तुम्हारे सिर पर सवार नहीं रहूंगा-तुम्हारे साथ-साथ रहूंगा। जैसे अब तक अन्य लोगों के साथ रहता आया हूं।
हां, ठीक है!
और फिर धरमचन्द वहां से अपने एक अन्य मित्र के यहां गया।
राम-राम गंगाराम।
राम-राम भाई धरमचन्द-कहो... कैसे हो?
ठीक हूं भाई। बस थोड़ी सी मुकद्दर की मार आ पड़ी है-तुम्हारे पास मदद के लिए आया हूं?
हां-हां कहो। तुम्हारी मदद करके मुझे हार्दिक खुशी होगी।
धन्यवाद भाई। तुम्हारी बात ने मेरी आधी परेशानी दूर कर दी। अब अगर दो माह के लिए तुम मुझे चालीस हजार रुपये दे दो तो बड़ी कृपा होगी।
मैं तुम्हें उचित ब्याज भी दूंगा और रकम भी निश्चित समय पर वापस कर दूंगा!
मुझे तुम पर विश्वास है धरमचन्द।
और सेठ गंगाराम से चालीस हजार रुपये उधार लेकर धरमचन्द वहां से चल दिया। थोड़ी देर बाद-
क्यों भई धरमचन्द! अगर रास्ते में फिर से लुटेरे तुम्हें लूटने के लिए आ जायें तो?

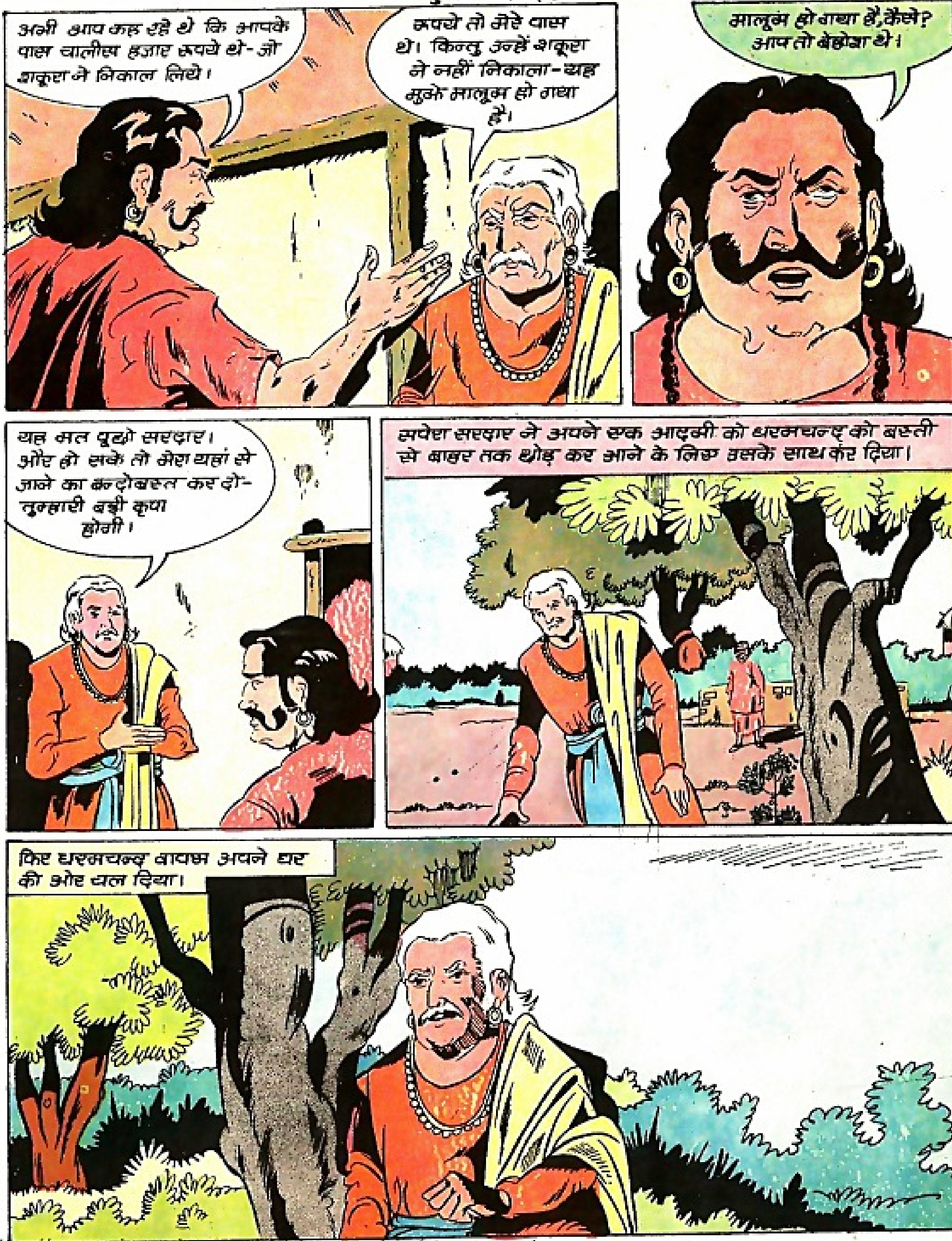

इस बार लुटेरे मुझे आसानी से नहीं लूट पायेंगे... मैंने गंगाराम से यह लाठी व छुरा लुटेरों का सामना करने के लिए ही लिया है।
तो इन रुपयों से तुम अपनी बिगड़ी हालत सुधार लोगे?
हां! अवश्य।
कैसे?
सबसे पहले मैं दस हजार रुपये सेठ रामसरन को दूंगा - जिसका माल बाढ़ के पानी में बह गया।
उधार चुकाने के साथ-साथ मैं उसे दस हजार रुपये और दूंगा और इस बार उससे बीस हजार रुपये का माल ले लूंगा।
और फिर मैं अपने साहूकार दोस्त को उससे लिए बीस हजार ब्याज समेत वक्त पर लौटा दूंगा। ताकि जरूरत पड़ने पर फिर दोबारा उससे समय पर कर्ज हासिल हो सके।
वाह! तुम सच-मुच बहुत हौसलामन्द हो... अपने दुर्भाग्य से अभी तक घबराये नहीं।


दुर्भाग्य की सोच-उससे घबराकर यदि मेरे जैसे लोग सिर पर हाथ रखकर बैठ जाएं तो यह दुनिया एक दिन भी न चले। क्योंकि हरेक के साथ इस दुनिया में- कहीं न कहीं... कभी न कभी कोई न कोई दुर्भाग्य जुड़ा ही रहता है।
धरमचन्द घर के रास्ते की ओर बढ़ गया।
अभी वह बीच रास्ते में ही था कि एकाएक जोर की हवा चलने लगी।
सांय सांय
उफ! बड़ी तेज हवा है।
तेज हवाओं के बाद एकाएक मूसलाधार बारिश होने लगी।
बारिश से बचने के लिए...
...धरमचन्द एक घने पेड़ की ओर भागा। उसने पेड़ के नीचे शरण ली।
उस पेड़ की एक शाख से एक विषधर सांप लटक रहा था- जिस पर धरमचन्द की नजर न पड़ी थी।
और सांप ने धरमचन्द को डस लिया।
फुस्स
हाय!


जहर के असर से धरमचन्द बेहोश होकर वहीं पेड़ के नीचे लुढ़क गया।
फिर जब उसे होश आया तो...
अब कैसी तबीयत है आपकी?
ठीक हूं! मगर आप लोग कौन हैं? मैं कहां हूं?
हम सपेरे हैं- आप सपेरों की बस्ती में हैं।
आपको सांप ने डस लिया था- संयोग से हमारी बस्ती के एक व्यक्ति की तुम पर नजर पड़ गई थी। वह तुम्हें यहां ले आया और हमने तुम्हारी जान बचा ली।
मगर-मगर मेरे पास एक थैली भी थी।
थैली- कैसी थैली?
उसमें चालीस हजार रुपये थे।
चालीस हजार रुपये?


सपेरों के सरदार ने तुरन्त उस व्यक्ति को आवाज दी- जो धरमचन्द को सपेरों की बस्ती में लेकर आया था।
शकूरा
आया सरदार!
शकूरा सरदार के सामने आया।
क्या है सरदार?
इस आदमी के पास रुपयों से भरी एक थैली थी- वह कहां है?
मुझे नहीं मालूम सरदार। मैंने तो जब इसे बेहोश देखा- इसके पास कुछ भी नहीं था-।
तभी--
हा-हा हा
???
?
धरमचन्द की नजर अपने निकट खड़े दुर्भाग्य पर पड़ी- जो हंस रहा था।
तुम हंस क्यों रहे हो?
इस बात पर कि तुम्हारे रुपये तो इस आदमी के तुम्हें यहां लाने से पहले ही एक बदमाश ले उड़ा था-वही तुम्हारी लाठी व छुरा ले गया है।
इस बेचारे पर तो तुम बेकार ही शक कर रहे हो।
तो तुमने उसे रोका क्यों नहीं?


मैं भला उसे क्यों रोकता? मैं तो तुम्हारा दुर्भाग्य हूं।
किन्तु तुम मेरे दोस्त हो!
??
हां! दोस्त तो हूं मैं तुम्हारा। किन्तु मैं जिसके साथ भी दोस्ती करता हूं– उसका कभी भला नहीं करता।
तो फिर मुझे तुम्हारी दोस्ती कबूल नहीं– फौरन मेरा साथ छोड़ कर भाग जाओ।
वैसे तो मैं भागने वाला नहीं हूं। तुम्हीं मुझे भगाने का कोई उपाय करो।
मेरा तो जब तक बस चलेगा तुम्हारे साथ ही रहूंगा।
तभी–
यह आप किस से बातें कर रहे हैं? यहां तो हम लोगों के अलावा कोई भी नहीं है।
हैं! मगर वह मेरा दुर्भाग्य है, इसलिए तुम लोगों को दिखाई नहीं दे सकता।
मैं आप की बात समझा नहीं।
मैं समझा भी नहीं सकता। किन्तु एक बात जरूर कहूंगा सरदार। तुम्हारा आदमी शकूरा बहुत अच्छा इन्सान है। किन्तु मेरे पास उसे ईनाम देने के लिए कुछ नहीं है।



अभी आप कह रहे थे कि आपके पास चालीस हजार रूपये थे- जो शकूरा ने निकाल लिये।
रूपये तो मेरे पास थे। किन्तु उन्हें शकूरा ने नहीं निकाला- यह मुझे मालूम हो गया है।
मालूम हो गया है, कैसे? आप तो बेहोश थे।
यह मत पूछो सरदार। और हो सके तो मेरा यहां से जाने का बन्दोबस्त कर दो- तुम्हारी बड़ी कृपा होगी।
सपेरा सरदार ने अपने एक आदमी को धरमचन्द को बस्ती से बाहर तक छोड़ कर आने के लिए उसके साथ कर दिया।
फिर धरमचन्द वापस अपने घर की ओर चल दिया।


घर...!, घर तो जल गया था। उसकी जगह धरमचन्द ने जैसे तैसे जंगल के पास एक झोंपड़ी खड़ी कर दी थी।
रुपयों का कुछ बन्दोबस्त हुआ?
धरमचन्द जब अपनी झोंपड़ी में पहुंचा–उसकी पत्नी व बच्चे उसका बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे थे।

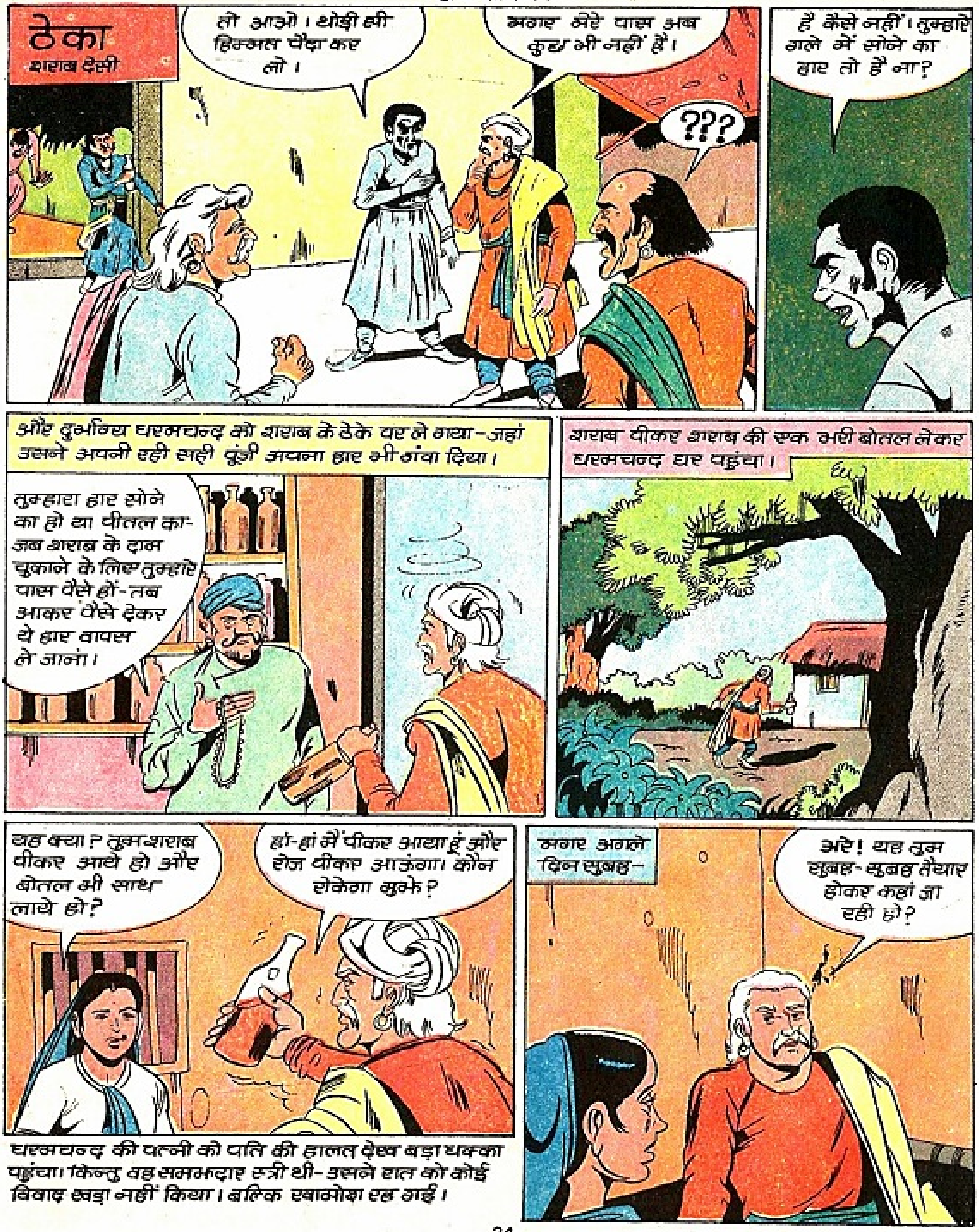

हुआ था- मगर हाथ से निकल गये।
उस रोज उसके घर चूल्हा भी नहीं जला। धरमचन्द उसकी पत्नी व बच्चे भूखे ही सोये।
मगर भूखे पेट भला नींद भी किसे आती है।
उफ! बच्चे भी भूखे हैं! आज का दिन तो जैसे तैसे निकल गया - कल कुछ न कुछ प्रबन्ध करना ही पड़ेगा।
अचानक-
क्या सोच रहे हो धरम चन्द?
तुम!
हां मैं! मैंने तो अब तुम्हारे साथ-साथ ही रहना है।
भाग जाओ यहां से! वरना मैं तुम्हें मार बैठूंगा।
अपने आप तो मैं जाने से रहा-तुम लड़कर-झगड़कर किसी भी तरह भगा सको तो भगा दो।


यह बात! तो लो... आज मैं तुम्हारा भुर्ता ही बना देता हूं।
ढिशुम
तभी धरमचन्द की पत्नी आशा गई। और...
- अरे-अरे! ये तुम्हें क्या हो गया है... क्यों बेकार हवा में घूंसे चला रहे हो?
ढिशुम
मैं हवा में घूंसे नहीं चला रहा हूं भाग्यवान। अपने दुर्भाग्य को मार रहा हूं। उसे मार कर भगा रहा हूं।
जबकि मैं इस समय तुम्हारा सबसे अच्छा और घनिष्ठ साथी हूं।
दुर्भाग्य को मार रहे हो- उसे मार कर भगा रहे हो... यह क्या कह रहे हो? मेरी समझ में तो कुछ नहीं आया।
तुम समझने की चेष्टा ना ही करो तो बेहतर है।
और हां, तुम यह छत पर उलटे क्यों लटक गये हो? नीचे आओ!


ताकि तुम मुझे फिर से मारना शुरू कर दो ? न बाबा न मैं यहीं ठीक हूं।
अरे धूल गिर जायेगी बेवकूफ! नीचे आ जाओ- मैं तुम्हें कुछ नहीं कहूंगा।
मुझसे अपना पीछा छोड़ने के लिये भी नहीं कहोगे?
हां-हां! नहीं कहूंगा!
धरमचन्द के आश्वासन पर दुर्भाग्य फिर से उसके निकट आकर बैठ गया।
मगर धरमचन्द की पत्नी तो इस बारे में कुछ जानती ही न थी। वह अपने पति को चिल्लाता बड़बड़ाता देख दुखी हो उठी और बच्चों से बोली—
हे भगवान! लगता है तुम्हारे पिता पागल हो गये हैं। कैसे अपने आपसे बड़बड़ा रहे हैं!
दुर्भाग्य धरमचन्द के अलावा किसी को दिखाई जो नहीं दे रहा था। इसलिये उसकी पत्नी व बच्चों को गलतफहमी तो होनी ही थी।
अब तुम क्या सोच रहे हो? क्यों नहीं अपने किसी दोस्त से अस्सी हजार रुपये मांग लेते!
वह किस लिए?
अरे! इतने रुपयों से तुम अपने दोस्त साहूकार व व्यापारी के कर्जे भी उतार सकते हो और स्वयं व्यापार भी कर सकते हो!


और अब की बार भी मेरी अंटी से रूपये निकल गये तो ?
तो क्या होगा ? अपने किसी और दोस्त से एक लाख साठ हजार मांग लेना।
हां, और उन रूपयों को भी गंवा दूं... नहीं-नहीं अब मैं किसी से कर्ज नहीं लूंगा। पहले ही मैं बड़ी मूर्खता कर चुका हूं। यह जानते हुए भी कि दुर्भाग्य मेरे सिर पर सवार है- मैंने उधार लेकर अपनी बरबादी को ही बढ़ावा दिया है।
तो फिर तुम क्या करोगे ? व्यापार फिर से ठीक ठाक करने के लिए पैसा कहां से लाओगे ?
यही मैं भी सोच रहा हूं।
क्यों न तुम अपनी पत्नी से उसके जेवर ले लो- और फिर उन जेवरों से तुम दस के बीस बना लो ?
वह कैसे ?
अरे ! अब भी तुम्हारी पत्नी के बदन पर जो जेवर हैं- उनकी कीमत तुम्हें दो चार हजार तो मिल ही सकती है- जेवर बेचकर मिले रूपयों से एक बार जुआ खेल लो... चार हजार के चार लाख बनते देर नहीं लगेगी।
चूंकि धरमचन्द बरबाद ही नहीं हुआ था - कर्जदार भी हो गया था। और उसे लिया गया कर्जा चुकाने की कोई सूरत नजर नहीं आ रही थी। इसलिए जुआ खेलकर कर्जा चुकाने की बात उसे जंच गई।


अगले ही दिन उसने अपनी पत्नी के बदन से सारे जेवर उतरवा लिये।
और उन्हें बेचकर...
जुआरियों के अड्डे पर पहुंच गया।
मगर थोड़ी ही देर में धरमचन्द सब कुछ हार गया।
हाय! पत्नी के जेवर बेचकर भी कोई फायदा नहीं हुआ! मैं पूरी तरह बरबाद हो गया।
अपना सारा धन लुटा कर धरमचन्द जुआरियों के अड्डे से बाहर आ गया।
अब क्या सोच रहे हो धरमचन्द?
यही कि पत्नी के जेवर भी लुटा दिये। घर पहुंच कर पत्नी से क्या कहूंगा। मेरी तो घर जाने की हिम्मत ही नहीं हो रही।

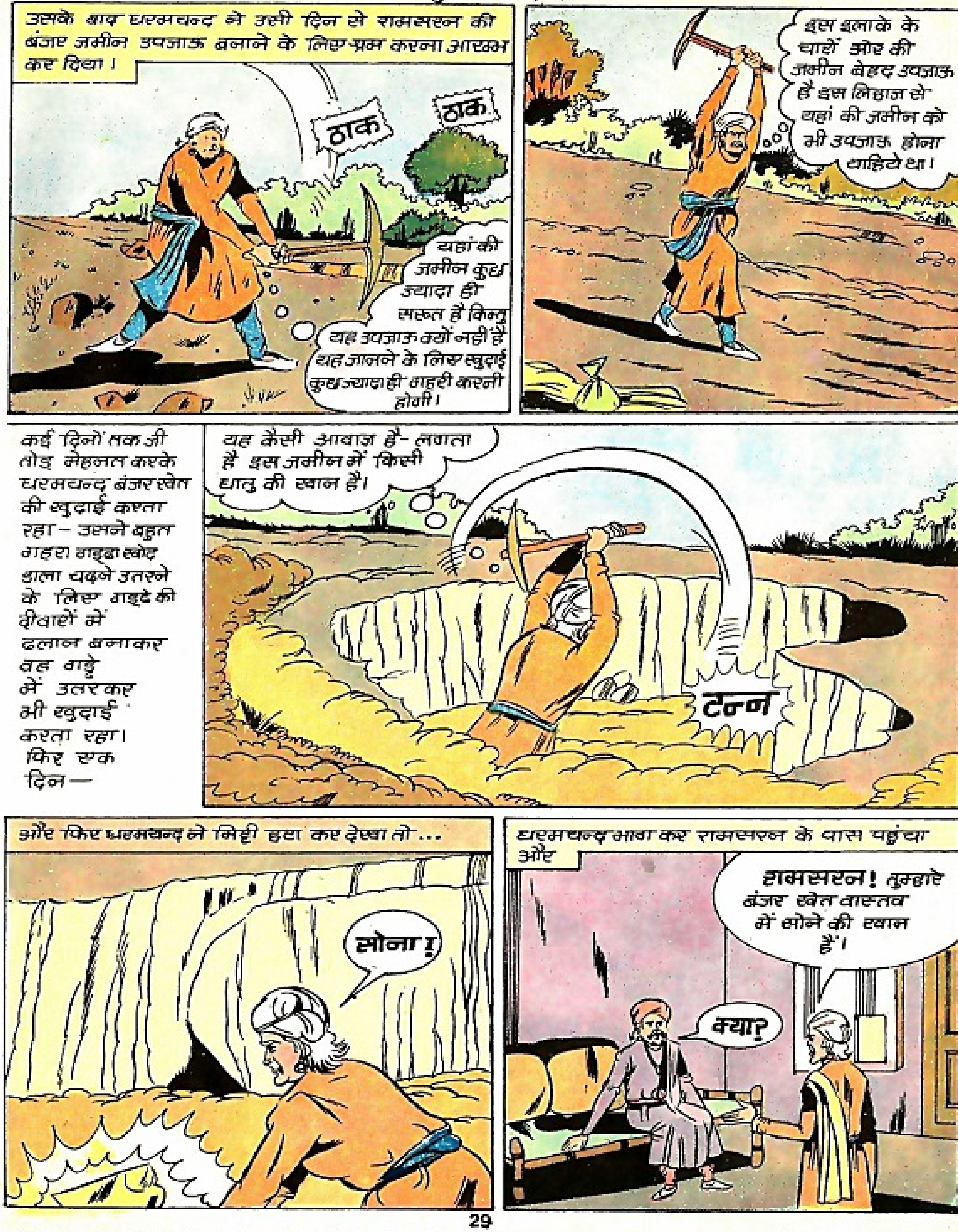

ठेका
शराब देसी
तो आओ। थोड़ी सी हिम्मत पैदा कर लो।
मगर मेरे पास अब कुछ भी नहीं है।
???
है कैसे नहीं। तुम्हारे गले में सोने का हार तो है ना?
और दुर्भाग्य धरमचन्द को शराब के ठेके पर ले गया—जहां उसने अपनी रही सही पूंजी अपना हार भी गंवा दिया।
तुम्हारा हार सोने का हो या पीतल का—जब शराब के दाम चुकाने के लिए तुम्हारे पास पैसे हों—तब आकर पैसे देकर ये हार वापस ले जाना।
शराब पीकर शराब की एक भरी बोतल लेकर धरमचन्द घर पहुंचा।
यह क्या? तुम शराब पीकर आये हो और बोतल भी साथ लाये हो?
हां-हां मैं पीकर आया हूं और रोज पीकर आऊंगा। कौन रोकेगा मुझे?
धरमचन्द की पत्नी को पति की हालत देख बड़ा धक्का पहुंचा। किन्तु वह समझदार स्त्री थी—उसने रात को कोई विवाद खड़ा नहीं किया। बल्कि खामोश रह गई।
मगर अगले दिन सुबह—
अरे! यह तुम सुबह-सुबह तैयार होकर कहां जा रहे हो?

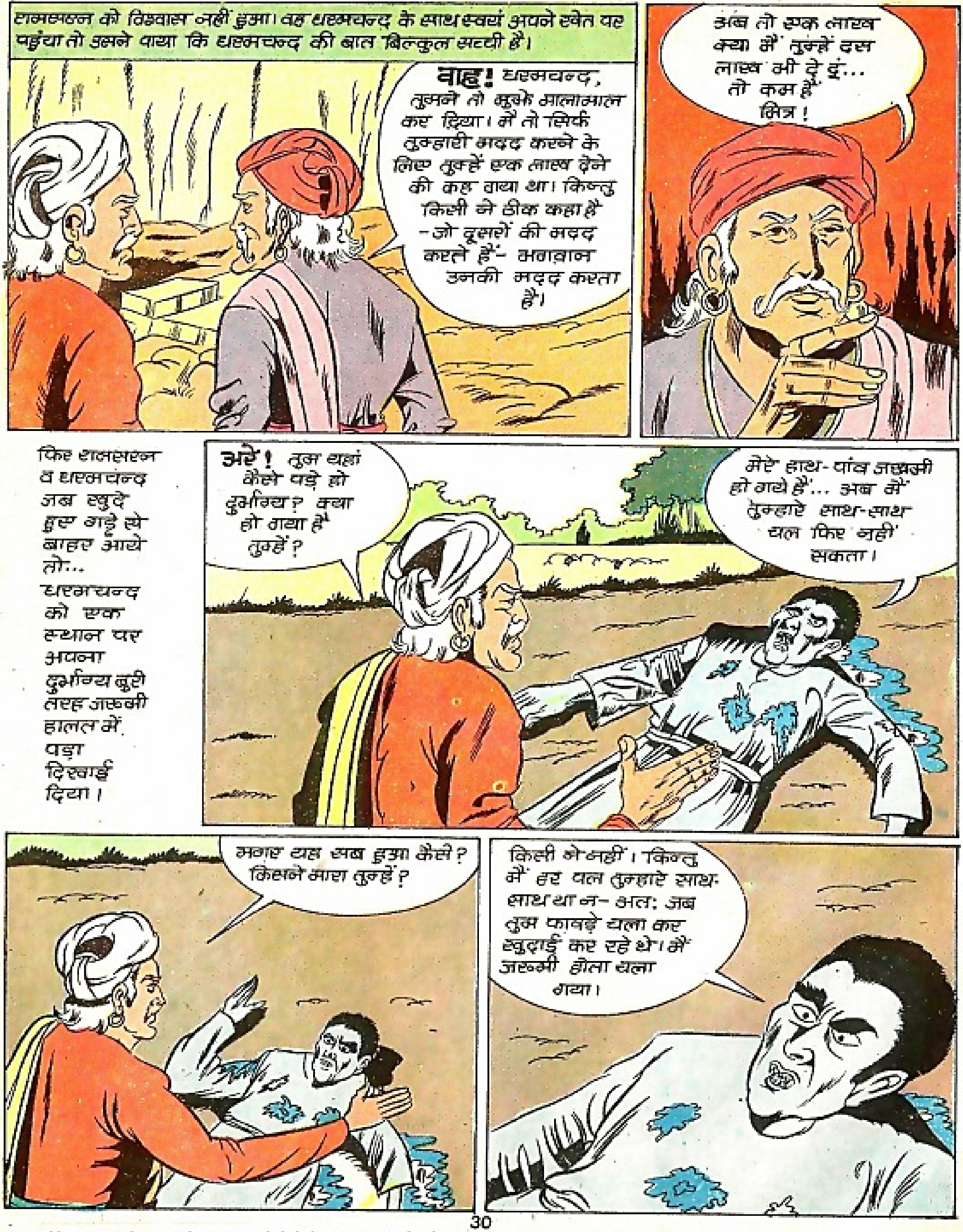

काम की तलाश में। कहीं चौका बर्तन करने, कपड़े धोने का काम तो मिल ही जायेगा।
क्या? तुम यह काम करोगी?
करना ही पड़ेगा। जब आप शराब पीकर सब कुछ बरबाद करने पर तुले हैं तो घर चलाने के लिए मुझे ही काम करना पड़ेगा। बच्चों को रोटी तो खिलानी ही है ना।
नहीं... नहीं मुझे माफ कर दो... कल दुर्भाग्य ने मेरी अक्ल पर पत्थर डाल दिये थे... मैं कसम खाता हूं अब कभी शराब नहीं पियूंगा और जल्दी ही सब ठीक-ठाक कर लूंगा।
आखिरकार सोचते-सोचते धरमचन्द को ख्याल आया कि कुछ दिन पहले अपने छोटे भाई करम-चन्द को उसने पचास रुपये उधार दिये थे।
क्यों न करमचन्द के पास जाकर अपने पैसे उससे मांगूं... किन्तु उसकी हालत पता नहीं कैसी है? वह रूपये दे भी सकेगा या नहीं।
और फिर धरमचन्द ने अपनी पत्नी को समझा बुझा कर रोका। फिर सोचने लगा - बच्चों के लिए रोटी का प्रबन्ध कैसे किया जाये-'। दो दिन से बच्चों ने आम के पेड़ों से फल तोड़ कर— खाकर ही गुजारा किया था। अन्न का एक दाना भी उनके पेट में न गया था।
तभी—
राम-राम भइया।
अरे भाई करमचन्द! आओ-आओ। अभी मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।

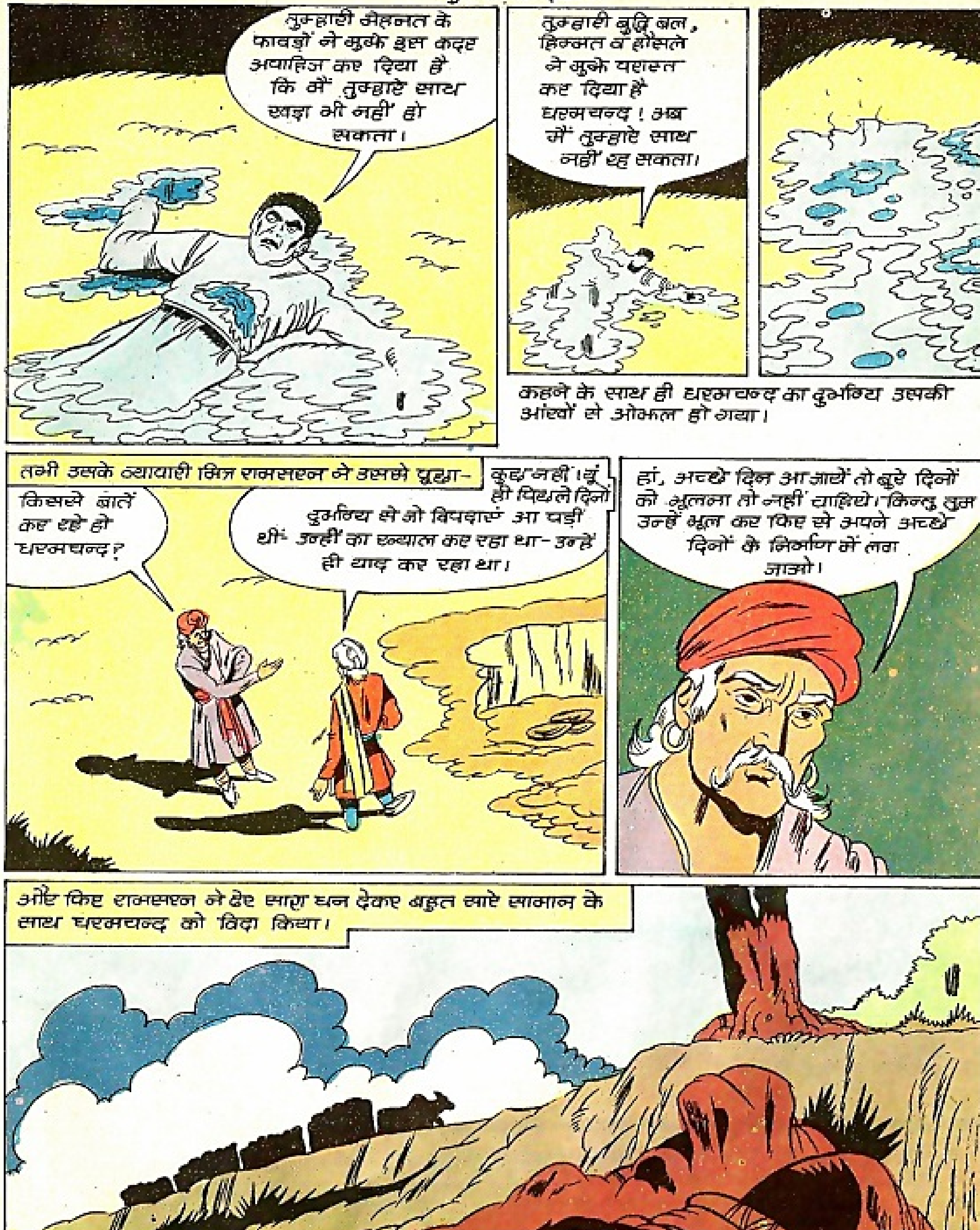

आप पर आई विपत्तियों के बारे में मुझे आज ही पता चला भइया। मैं आपसे रुपये उधार लेकर घर पहुंचा तो एक दोस्त शहर से आया बैठा था। उसके यहां कल रात एक समारोह था- मेरा दोस्त उस समारोह में मुझ से गाना गवाना चाहता था।
जैसा वह चाहता था- मैंने कल रात उसके यहां समारोह में गाना गाया तो सब लोग बहुत प्रसन्न हुए और मुझे ढेर सारे ईनाम-पुरूस्कार व रुपया दिया गया।
भगवान की दया से अब मुझे किसी बात की कमी नहीं है और मैं यह आपसे उधार लिए पचास रुपये वापस लौटाने आया हूं।
तेरा बहुत-बहुत धन्यवाद करमचन्द... जो तूने अच्छे दिन लौटते ही सबसे पहले मेरे रुपये लौटाने की सोची।
करमचन्द ने धरमचन्द को और भी रुपये देने चाहे, किन्तु धरमचन्द ने अपने रुपयों से एक रुपया भी ज्यादा न लिया।
करमचन्द के जाने के बाद-
अब इन रुपयों से क्या करोगे धरमचन्द?
सबसे पहले घर वालों के खाने पीने के लिए भोजन की व्यवस्था करूंगा।
फिर...?
जिन लोगों का मैंने रुपया देना है- उन्हें अपने ऊपर आई विपत्ती की खबर भिजवा कर उनसे रुपया चुकाने की मियाद बढ़वाऊंगा।


मियाद बढ़वा कर तुम क्या करोगे? रुपया वापस करने के लिए धन एकत्रित कब और कैसे करोगे?
कर लूंगा... किसी न किसी तरह... कोई न प्रबन्ध। यह सब तुम्हें बताने का कोई फायदा है क्या?
भगवान ने मुझे बुद्धि दी है- ज्ञान दिया है- हौसला दिया है... मेहनत करने की शक्ति दी है- इन सबकी बदौलत मैं अपने दुर्भाग्य से भी लड़ सकता हूं।
और फिर धरमचन्द ने अपने परिवार के लिए कुछ दिनों के भोजन का प्रबन्ध किया। फिर वह अपनी पत्नी से बोला-
सुनो, मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जाना चाहता हूं...। तब तक तुम्हें ही अपनी व बच्चों की देखभाल करनी होगी। जब तक हमारा दुर्भाग्य हमारे पीछे पड़ा है... मैं किसी बड़े काम में हाथ नहीं डालना चाहता - किन्तु दुर्भाग्य से लड़ने के लिए पूरे परिवार को सम्मलित प्रयास करना होगा।
यानी जरूरत पड़ने पर यदि मैं कोई काम करने लगूं तो आपको कोई आपत्ति नहीं होगी?
नहीं! तुम सिलाई कढ़ाई जानती हो- कोशिश करना यही काम तुम्हें मिल जाये
और फिर धरमचन्द अपने लिए दो वक्त की रोटी बंधवा कर बाहर की ओर चल दिया। उसका दुर्भाग्य उसके साथ-साथ चल रहा था।
रास्ते में वह अपने मित्र गंगाराम व साहूकार दोस्त से भी मिला। उनसे रुपया ब्याज समेत वापस करने की कह रुपया वापस करने की मियाद बढ़वा ली। फिर आखिर में वह...


अपने व्यापारी दोस्त रामसरन के पास पहुंचा। उसे अपनी सारी व्यथा कथा सुनाई और बोला —
सिर्फ कुछ महीनों के लिए मैं कोई नौकरी करना चाहता हूं।
किन्तु नौकरी करके तुम भला क्या कमाओगे?
अपने परिवार की दाल रोटी चलाने लायक तो कमा ही लूंगा।
नौकरी में लगी बंधी तनख्वाह तो मिलेगी ना-मैं उसी में गुजारा कर लूंगा।
फिर जैसे ही मैं वक्त की करवट सीधी महसूस करूंगा-मैं फिर से व्यापार में कदम रख कर सबसे पहले अपने कर्जे चुकाऊंगा।
और फिर रामसरन को पूरी तरह सन्तुष्ट कर चुकने के बाद जब धरमचन्द ने उससे नौकरी दिलवाने की प्रार्थना की तो…
…वह बोला-
एक काम तो तुम्हें मैं भी दे सकता हूं धरमचन्द। मेरे कुछ खेतों की जमीन एकदम बंजर है… तुम उन्हें किसी तरह उपजाऊ बना दो तो मैं तुम्हें एक लाख रुपये दूंगा।
वैसे हर महीने तनख्वाह के रूप में मैं तुम्हें ढाई सौ रुपये अलग से भी देता रहूंगा।
बंजर जमीन को तो मैं उपजाऊ बना दूंगा… मगर उसके लिए एक लाख रुपये तो बहुत ज्यादा हैं रामसरन!
व्यापारी रामसरन के पास पैसे की कमी नहीं थी। वास्तव में वह धरमचन्द के प्रति गहरा स्नेह रखता था-इसलिए उसकी मदद करना चाहता था।
किन्तु प्रकट में वह बोला —
कोई ज्यादा नहीं हैं एक लाख- अगर मेरी बंजर जमीन उपजाऊ बन गई तो मैं दो ही सालों में उससे कहीं ज्यादा कमा लूंगा


उसके बाद धरमचन्द ने उसी दिन से रामसरन की बंजर जमीन उपजाऊ बनाने के लिए श्रम करना आरम्भ कर दिया।
ठाक
ठाक
यहां की जमीन कुछ ज्यादा ही सख्त है किन्तु यह उपजाऊ क्यों नहीं है यह जानने के लिए खुदाई कुछ ज्यादा ही गहरी करनी होगी।
इस इलाके के चारों ओर की जमीन बेहद उपजाऊ है इस लिहाज से यहां की जमीन को भी उपजाऊ होना चाहिये था।
कई दिनों तक जी तोड़ मेहनत करके धरमचन्द बंजर खेत की खुदाई करता रहा — उसने बहुत गहरा गड्ढा खोद डाला चढ़ने उतरने के लिए गड्ढे की दीवारों में ढलान बनाकर वह गड्ढे में उतर कर भी खुदाई करता रहा। फिर एक दिन —
यह कैसी आवाज़ है- लगता है इस जमीन में किसी धातु की खान है।
टन्न
और फिर धरमचन्द ने मिट्टी हटा कर देखा तो ...
सोना!
धरमचन्द भाग कर रामसरन के पास पहुंचा और
रामसरन! तुम्हारे बंजर खेत वास्तव में सोने की खान हैं।
क्या?


रामस्वरूप को विश्वास नहीं हुआ। वह धरमचन्द के साथ स्वयं अपने खेत पर पहुंचा तो उसने पाया कि धरमचन्द की बात बिल्कुल सच्ची है।
वाह! धरमचन्द, तुमने तो मुझे मालामाल कर दिया। मैं तो सिर्फ तुम्हारी मदद करने के लिए तुम्हें एक लाख देने की कह गया था। किन्तु किसी ने ठीक कहा है -जो दूसरों की मदद करते हैं- भगवान उनकी मदद करता है।
अब तो एक लाख क्या मैं तुम्हें दस लाख भी दे दूं... तो कम है मित्र!
फिर रामस्वरूप व धरमचन्द जब खुदे हुए गड्ढे से बाहर आये तो... धरमचन्द को एक स्थान पर अपना दुर्भाग्य बुरी तरह जख्मी हालत में पड़ा दिखाई दिया।
अरे! तुम यहां कैसे पड़े हो दुर्भाग्य? क्या हो गया है तुम्हें?
मेरे हाथ-पांव जख्मी हो गये हैं... अब मैं तुम्हारे साथ-साथ चल फिर नहीं सकता।
मगर यह सब हुआ कैसे? किसने मारा तुम्हें?
किसी ने नहीं। किन्तु मैं हर पल तुम्हारे साथ-साथ था न- अत: जब तुम फावड़े चला कर खुदाई कर रहे थे। मैं जख्मी होता चला गया।



तुम्हारी मेहनत के फावड़ों ने मुझे इस कदर अपाहिज कर दिया है कि मैं तुम्हारे साथ खड़ा भी नहीं हो सकता।
तुम्हारी बुद्धि बल, हिम्मत व हौसले ने मुझे परास्त कर दिया है धरमचन्द! अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।
कहने के साथ ही धरमचन्द का दुर्भाग्य उसकी आंखों से ओझल हो गया।
तभी उसके व्यापारी मित्र रामसरन ने उससे पूछा-
किससे बातें कर रहे हो धरमचन्द?
कुछ नहीं। यूं ही पिछले दिनों दुर्भाग्य से जो विपदाएं आ पड़ी थीं- उन्हीं का ख्याल कर रहा था- उन्हें ही याद कर रहा था।
हां, अच्छे दिन आ जायें तो बुरे दिनों को भूलना तो नहीं चाहिये। किन्तु तुम उन्हें भूल कर फिर से अपने अच्छे दिनों के निर्माण में लग जाओ।
और फिर रामसरन ने ढेर सारा धन देकर बहुत सारे सामान के साथ धरमचन्द को विदा किया।





सरस्वती आर्ट प्रिंटर्स, नयी अनाज़ मंडी, दिल्ली-110006 द्वारा मुद्रित।

# रहस्य रोमांच से भरपूर शक्तिपुत्र का एक नया हॉरर कॉमिक्स

5E

A.H.W.
SANTOSH SERIES




# शक्तिपुत्र और हिटलर का भूत

## शक्तिपुत्र के अन्य कॉमिक्स

- यन्त्रदानव का आतंक
- शक्तिपुत्र का अपहरण
- शक्तिपुत्र और कालभुजंग
- शक्तिपुत्र और लोहे का अजगर
- ☆ शक्तिपुत्र और अदृश्य मानव
- ☆ शक्तिपुत्र और मैडम ब्लैक स्टोन
- ☆ शक्ति पुत्र और आकाश गंगा का बाग़ी
- ☆ शक्तिपुत्र और कालयन्त्र का पुजारी
- ★ शक्तिपुत्र और समयजंजाल का अंत
- ★ शक्तिपुत्र और रेत की देवी
- ★ शक्तिपुत्र और अमन के लुटेरे
- ★ शक्तिपुत्र और ज़हरीला संगीत

राधा कॉमिक्स 33 हरी नगर मेरठ 250002